The House re-assembled after lunch at five minutes past two of the clock. THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) in the Chair.

RE PERSONAL EXPLANATION BY PROF. SAIYID NURUL HASAN

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Mr. Hasan.

PROF. SAIYID NURUL HASAN (Nominated) : Sir, in the course of his speech in the debate on the Rabat Conference, Shri Rajnarain stated on 27th November, 1969, that in 1940 I and another person prepared a statement saying that Gandhiji was an agent of the British and further that we appended the name of Shri Rajnarain to this statement in an unauthorised manner. I categorically deny that I was a party to any statement which categorised Gandhiji as a British agent and, therefore, the question of my having appended the name of Shri Rajnarain in an unauthorised manner does not arise.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मुझे बड़ी खुशी है कि हमारे मित्र नुरूल हसन साहब आज भी इस सदन मे एक दूसरा असत्य बोल रहे हैं। मैं इस मामले में चाहूंगा कि इस को प्रिविलेज कमेटी मे भेजा जाय क्योंकि सभी चीजें रेकार्ड पर हैं। 1940 में बनारस में चौथी यू०पी० स्टूडेंट्स फेडरेशन की कान्फरेंस हुई और उस में तीन आदमियों की एक सब-कमेटी बनी थी—राजनारायण, नुरूल हसन साहब और गोपाल दास। हम ने उन को कहा था कि हम व्यक्तिगत सत्याग्रह नही चाहते, इस व्यक्तिगत सत्याग्रह को जन आंदोलन मे परिणत किया जाय। मगर हम कभी यह नही कहे थे कि कोई ऐसा ड्राफ्ट जाय जिसमे यह कहा हो कि गांधी जी अंग्रेजी के एजेंट हैं। वह ड्राफ्ट हमारे दस्तखत से, नुरूल हसन साहब के दस्तखत से और गोपाल दास के दस्तखत से गया है और त्रिलोकी सिंह जी के जो भाई हैं मुंशी बलराम, जो उस समय जनरल सेक्रेटरी थें उत्तर प्रदेश फेडरेशन के उन को गया है और यह रेकार्ड पर है। इस सदन में हम इस चीज को कई बार कह चुके हैं। और इस सदन मे आज नूरुल हसन साहब एक दूसरा असत्य बोल रहे हैं। अपने कसूर को हमारे मित्र छिपा रहे हैं। यह बात हम पहले भी कह चुके हैं। उस समय तीन आदमियों की कमेटी बनी थी . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : No, no, we are not going into that. I have noted your objection.

श्री राजनारायण : उस समय कम्युनिस्ट पार्टी का नारा था . . .

(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : I have listened to your objection. Your objections is noted.

श्री राजनारायण : जब आप ने उन को कहा है तो आप हम को भी बोलने दें। आप हम को एक मिनट भी बोलने देना नहीं चाहते।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : That is why I have given you an opportunity to raise your objection.

श्री राजनारायण : तो हम को आप सुनिये तो।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : He has shown me his statement, I had given him approval. Now, you had not shown your statement.

श्री राजनारायण : हम को तो आप ने स्टेटमेंट नही दिखाया।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Well, I have given you an opportunity.

श्री राजनारायण : एक मिनट हम को सुनिये। तो मैं कहना चाहता हूं कि नुरूल हसन साहब इस सदन मे यह दूसरा असत्य बोले हैं। नूरुल हसन साहब और गोपाल दास, यह दोनों कम्युनिस्ट थे और कम्युनिस्ट पार्टी उस समय चाहती थी कि जन आंदोलन हों। उस समय हिटलर के बम लंदन पर जा रहे थे और हिटलर और स्टालिन के बीच गोल्डन चेन आफ फ्रेंडशिप—मित्रता की सुनहरी जंजीर—हो गयी थी। गांधी जी ने जब आरंभ में व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया था तब

कम्युनिस्ट पार्टी का यह नारा था कि व्यक्तिगत आंदोलन न चले, बल्कि यहां जनक्रांति हो। मगर जब हिटलर के बम मास्को पर पड़ने लगे तो कम्युनिस्ट पार्टी ने पीपुल्स वार का नारा दिया। तो उस समय नुरूल हसन साहब कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर थे, लेकिन नुरूल हसन साहब ने यहां पर इस बात को कई बार हम को बाध्य किया है कि मैं आप से निवेदन करूं कि आप इस मामले को विशेषाधिकार समिति में भेज दें ताकि पता चल जाय कि हम सही हैं या नुरूल हसन साहब सही हैं। मैं वहां सारी बातें पेश करने के लिए और सिद्ध करने के लिए तयार हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Mr. Kulkarni.

श्री नेकी राम (हरियाणा) : अब तो रोटी हजम हो जायगी ?

श्री राजनारायण : क्या बात है ? यह हम हजारों बार कह चुके हैं।

SHRI A. G. KULKARNI : (Maharashtra) : Mr. Vice-Chairman, Sir...

श्री राजनारायण : यह क्या बोल रहे हो ?

SHRI A. G. KULKARNI : I am talking on Rabat. You are talking on rubbish. That is the difference.

श्री राजनारायण : हां, रबात पर बोलें, ठीक है।

SHRI A. G. KULKARNI : Mr. Vice-Chairman, . .

श्री राजनारायण : एक शब्द उन का हटा दिया जाय 'रबिश'। मैंने जो कुछ कहा था नुरूल हसन साहब के लिए मैं उस पर बिल्कुल खड़ा हूं।

(*Interruptions*)

MOTION *RE* STATEMENT ON INDIA'S PARTICIPATION IN THE ISLAMIC CONFERENCE AT RABAT —*contd.*

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra) : Sir, this Rabat affair is a matter of great concern to us. Nobody will agree that this country has gained anything whatsoever by way of its image or prestige being hightened in West Asia because of this Rabat affair. But at the same time, Mr. Vice-Chairman, I want to say that I do not agree with the policy and pattern of the Opposition parties, particularly the reactionary political parties, in taking the Rabat affair on a religious plane and saying that it will damage this Government's image either in Parliament or in the country. I am totally opposed to the Rabat affair being looked at in that perspective. Mr. Vice-Chairman, I have got my own reservations on the Rabat affair, but I do support the Government when the Opposition and reactionary parties are trying to malign the Government and bring down the Government on this very affair.

SHRI MULKA GOVINDA REDDY (Mysore) : Do not speak on the Opposition. Speak on the merits of the case.

SHRI A. G. KULKARNI : I am coming to the merits. But before coming to the merits, let me speak my own mind. I am not going to toe the line you want.

Mr. Vice-Chairman, about this Rabat affair, I may draw the attention of the Government to another aspect which is the need for a complete re-appraisal of the West Asia policy followed by the Government of India. The Government of India, after the Rabat incident, has taken certain measures to show their disapproval to the Arab and West Asian countries—by Mr. Dinesh Singh by recalling our representatives, Charge d'Affaires, from two or three countries and by Mr. Bhagat, cancelling his proposed trip to Teheran. But what I say is that this much is not enough. This type of mild disapproval will not set right the Government's approach towards the West Asian countries. The Arab countries also must try to understand the Government of India's anxieties. We are very happy, Sir, that our policy on West Asia will not be an *ad hoc* policy, but we must now identify what our long-term and short-term interests are in West Asia. In this connection, I was very happy to note in the statement made by the Foreign